Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-3,December-2017

शिवानी का उपन्यास 'कालिंदी' में परिवेश

प्रस्तुत कर्ता :-

प्रो.भारमलाजी पी. कणबी

(हिन्दी विभाग)

श्री यु.एच. चौधरी आर्ट्स कोलेज,वडगाम, जि. बनासकांठा

भूमिका :- साहित्य सदैव युगीन यथार्थ व् परिवेश का प्रतिबिम्बन करता है क्योकि साहित्य जिस मानवीय संवेदना के बिज का प्रितकलांक है | उस बिज के रोपण, अंकुरण व् पल्लवन की भूमि युगीन परिवेश ही है | साहित्यकार की संवेदना द्रष्टि परिवेश से ही बनती है, जो साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति पाती है |

शिवानी हिन्दी कथा-साहित्य का सुपरिचित हस्ताक्षर है | लोकप्रियता के उत्तुंग शिखरों का स्पर्श करनेवाली कथाकार शिवानी गम्भीर चिन्त्न्युक्त संस्मरणकरता, निबंधकार व रेखाचित्रकार भी है | उनके लेखन में पारिवारिक परिद्रष्य, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, स्त्री-समस्या तो कहीं राजनितिक रंग विकीर्णित है| उनका साहित्य नारी जीवन के विभिन्न कोंणों के चित्र दिखाता है तो कहीं पारिवारिक और सामाजिक जीवन की झाकियाँ | कुमाऊं संस्कृति की शीतल सौंधी बयार पाठक को अभिभोत करती है, तो कभी बंगला संस्कृति की तरंगे तो कभी आधुनिक भारतीय परिवेश के यथार्थ प्रवाह उसे प्रवाहित कर ले जाता है |

'कालिंदी' उपन्यास ने परिवेश :-

शिवानी की सभी कृतियाँ परिवेश से पनपी है, परिवेश में पल्लवित हुई है और परिवेश को प्रतिबिम्बित करती है | कालिंदी उपन्यास अपवाद नहीं है | 'कालिंदी' उपन्यास शिवानी की प्रतिमा का एक नया आयाम है | नारी-सम्वेदना की गहनता ओर ह्रदय की विशालता का मार्मिक चित्रण है | 'कालिंदी' उपन्यास भारतीय परिवेश का ऐसा दर्पण है, जिसमे भारतीय समान, धार्मिक मान्यताएँ, राजनितिक, लोक-

संस्कृति की झलक प्रतिबिम्बित होती है जिसका अध्ययन इन्ही बिन्दुओ से करने का प्रयास किया गया है |

(१) सामाजिक परिवेश :-

भारतीय परिवेश में वैयक्तिकता की उपेक्षा सामाजिकता का महत्त्व है | भारतीय समाज में समाज में समाज की जडें भुत गहरी है, इसलिए समाज की अवहेलना भारतीय परिवेश में कभी संभव नहीं रही | भारतीय जीवन-प्रवाह सामाजिक नियमों, मान्यताओं व् मर्यादाओं की सीमाओं में प्रवाहित होता है इसलिए सामाजिक सीमाओं को लांघने का दु:साहस सहज नहीं है | लोग क्या कहेंगे उक्ति भारतीय जन-मानस के चेतन या अवचेतन मन में विधमा रहते हुए उसके लगभग प्रत्येक कार्य को परिचालित करती है | प्रस्तुत उपन्यास कालिंदी द्वार से बरात लौटाए जाने पर उसके मामा महेंद्र में अपनी छोटी बहन के अश्रु पोंछ सात्वना देने को तत्पर होते है, उन्हें चिंता है तो समाज की - "लोगों में बदनामी तो हम सबकी हो ही गई है, हमें भी तो अभी एक बेटी ब्याहनी है |[1] कुछ इसी तरह की प्रतिक्रिया महेंद्र की पत्नी द्वारा व्यक्त की जाती है - " मन हनाही भरा हमारी नाक कटवाकर ? झाँसी की रानी बन दरवाजे पर आई बरात को तो लौटा ही दिया, अब द्वार बांध कर कुछ और तमाशा करने का इरादा है क्या ?"[2]

नारी की स्थिति को भी समाज के भय का तत्व पर्याप्त प्रभावित करता है | समाज में बदनामी का भय नारी के अपने प्रति होनेवाले अत्याचारों का प्रतिकार करने के आड़े आ जाता है | कालिंदी कहती है - " बदनामी से दर कर नारी स्वयं ही कलुष के मॉल को राख से ढक, जानबूझ कर मुँह फेर लेती है |"[3] इस प्रकार यह तत्व जहाँ सामाजिक परम्पराओं, संस्कारों, मूल्यों के संरक्षण की भूमिका निभाता है, वहीं निरर्थक, अनुपयोगी, गली-सदी परम्पराओं का बोझ ढोने को भी बाध्य करता है | भारतीय समाज में नारी-स्थिति के संबंध में कहा जा सकता है कि- 'यत्र नार्यास्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता, का मन्त्र सृजित करनेवाली धरा पर जितनी दुर्गति नारी की हुई है, उतनी शायद किसी अन्य परिवेश में हुई हो |

शिवानी साहित्य में नारी की व्यथा, पीड़ा, तड़प, घुटन, कुंठा की मानसिकता की छ्त्प्ताहत को वाणी मिली है | ,कालिंदी, में भी नारी-संवेदना का उदघाटन हुआ है, उपन्यास में नारी के अबला होने की पीड़ा का कारुण स्वर स्फूटित हुआ है | अत्याचारों का मार्मिक चित्रं शिवानी ने किया है- "बताशे सि सुकोमल दुग्ध धवल पीठ पर जली लकड़ी के दागे गए लम्बे-लम्बे निशाँ थे |"[4] पुरुष ही नहीं, स्त्री ईर्ष्या व् अत्याचार का भी इसमें बराबर का हाथ रहता है, फिर वह चाहे सास के रूप में हो, जेठानी, भाभी, नन्द या फिर सौत के रूप में | उपन्यास में शारदा वर्मा ऐसी स्त्री है, जो अपने जीजा कुलभूष्ण से विवाह कर लेती है और अपनी बड़ी बहन को उसके घर से निर्वासित कर देती है | शिवानी लिखित है, "बड़ी बहन की दुरावस्था का पूरा

लाभ उठाकर एक दिन स्वेच्छा से ही साली का पद त्याग वह सगे जीजा के हृद्यासन पर विराजमान हो गई- बड़ी बहन जब चेती तो उसकी सोने की लंका जलकर राख हो गई थी |"[5]

'कालिंदी' उपन्यास में रामलीला देखने गई अन्ना के साथ मनोहर जोशी छेड़छाड़ करता है, जिसके बाद अन्ना का घर से निकलना बांध कर दिया जाता है | यह कैसी विडंबना है की अपराधी तो स्वतंत्र घूमता है और पीड़ित को घर में नजरबंद कर दिया जाता है | कालिंदी के साथ डॉ. अखिलेश द्वारा किया गया मर्यादाहीन व्यवहार गर्त में गिरती नैतिकता युवको में बढ़ती अच्छृखलता तथा स्त्री जाती के प्रति बढ़ते अपराधो की और संकेत करता है |

शिवानी को नारी परिवर्तन मात्र ऊपरीव् खोखला लगता है, जाखनदेवी के मंदिर में कालिंदी को आंदोलित करता निःशब्द, मौन मनोवेग वस्तुत: शिवानी के अनुभूत सत्य को मुखरित करता है- "कहाँ मुक्त हुई है नारी ? क्या भारतीय नारी जीवन के अधिकाँश अंगो में सदा पुरुषाश्रित ही रहेंगी ? हम भले ही नारी स्वाधीनता और प्रगति का मिथ्या प्रचार करते न थकें, भले ही हमारा संविधान कहे की उसने अबला को सबला बना दिया है | पर नारी आज भी उतनी ही विवश है, उतनी ही असहाय |...नारी मूल भूमिका आज भी वाही है- पुरुषाश्रित, पुरुष पारायण- यदि वह पति के आश्रय में है तो समाज उसे अनायास मान्यता दे देता है, भले ही उसका पति कामी हो, कुकर्मी हो, कुबुध्धि हो, किन्तु यदि वह पति के साहचर्य से बंचित है, तो वह बली का बकरा है, उसको कोई भी खा ले, क्या दोष ?"[6]

इस प्रकार 'कालिंदी' उपन्यास में आधुनिक और परंपरागत परिप्रेक्ष्य में सामाजिक संदर्भ सामाजिक परिवेश प्रकट हुआ है |

(२) राजनितिक परिवेश :-

प्रस्तुत उपन्यास में राजनितिक परिवेश की झलक भी मिलती है |देवेन्द्र भट्ट वरिष्ठ पुलिस अधिकारी है, इसलिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति उसे प्रभावित करती है | जब भी सत्ता परिवर्तन होता है, उसका प्रभाव प्रशासनिक अधिकारयों पर अवधी पड़ता है | जो दल सत्ताधारी बनता है वह अपने समर्थक अधिकारी वर्ग को महत्वपूर्ण पद प्रदान करने लगता है और तबादलों का दौर प्रारम्भ हो जाता है | अपने-अपने समर्थकों, अपने खेमें के लोगों को अधिक से अधिक लाभ पहुँचाने के प्रयास जोरशोर से होने लगते है | राजनीति की प्रतिशोधात्मक कुटिलता की गाज सरकारी अधिकारियों पर गिरती है |

भारतीय राजनीति नैतिकता, न्याय, सत्य आधारित मूल्यों से छिटककर दूर जा कड़ी हुई है, जिसमे अनैतिकता, स्वार्थ, भाई जातिवाद, प्रतिशोध की भावना का बोलबाला है | उपन्यास में देवेन्द्र ऐसी अन्यायपूर्ण राजनीति का शिकार होता है, जब उससे भुत जूनियर छोटे स्तर के पदाधिकारी को उससे

उच्चपद प्रदान कर उसका अफसर दिया जाता है, तो उसका स्वाभिमान जो इस आघात के लिए प्रस्तुत नहीं था, उसे त्यागपत्र देने हेतु विवश कर देता है |

आधुनिक राजनितिक हास के इस युग में शिवानी मामा जैसे परोपकारी, कर्मठ, निवार्थी, गांधीवादी ग्रामीण का चित्र चित्रित कर भारतीय राजनीति के लिएआद्रश की ओर संकेत करती है | निजी स्वार्थों के लिए देश को बेचने वालों की इस वर्तमान राजनीति के कर्दम में व्यत्क्या कोई पिरी मामा जैसा कमल खिल पायेगा ? इस प्रश्न के उत्तर में निस्तब्धता छाई अनुभव होती है |

(३) आर्थिक परिवेश :-

'कालिंदी' उपन्यास में आर्थिक समस्याएँ सहज ही आ गई है | कुमाऊं परिवेश को चित्रित करते हुए पहाड़ी क्षेत्रों की निर्धनता का भी उल्लेख शिवानी ने किया है | पांच-पांच रूपये पाकर बैजनाथ के मंदिर के बाहर खड़े डॉ छोटे बालकों की प्रसन्नता का पारावार नहीं रहता | पेट भरने के लिए दाने-दाने को मोहताज बचपन शिक्षा प्राप्ति के विषय में स्वप्न में भी कैसे सोच सकता है | देवेन्द्र के शब्दों में शिवानी करुणा द्रवित हो उठती है- "यहा की यही दरिद्रता मुझे कभी कभी बुरी तरह झिंझोड़ देनी पड़ी यहाँ के दो-दो मुख्यमंत्री प्रदेश के स्वर्ण-सिंहासन पर बैठे, ना जाने कितनों ने मंत्री पद भोगा- कितने संसद सदस्य बने, पर क्या कभी पहाड़ के इस दलित दरिद्र के लिए कुछ कर सके ? कत्यूर की यह घाटी ही शायद अभिशप्त है |"[7]

यही निर्धनता अनेक सामाजिक बुराइयों को जन्म देती है | सात-आठ वर्ष के निर्धन बालक देवेन्द्र व् शिला ले दिए रुपयों से बीडी पिटे है अर्थात् अभाव भावी युवा पीढ़ी को नशे की लत से खोखली कर कर्मण्यता व अपराधों के तिमिरा छन्न गटर में धकेल रहे है | प्रस्तुत उपन्यास अन्धकार की ओरबढ़ती युवा पीढ़ी के प्रति सचेत करता है, चेतावनी देता है |

उपन्यास में बढ़ती बेरोजगारी और भ्रष्टाचार की ओर सरोज के शब्द संकेत कर देते है- "पर यहाँ मिल रही है नौकरी ! कब से तो एम्पलोयमेंट इक्सचैज में नाम लिखा है, जब इंटरव्यू के लिए बुलाते है, जाती हूँ, पर कौन देगा मुझे नौकरी ? न कोई सिफारिश करनेवाला है, न बाबू के पास इतनी रकम है की घूस दे |"[8] इस प्रकार उपन्यास में निर्धनता, बेरोजगारी, रिश्वतखोरी जैसी आर्थिक समस्याओं के बिच पिसते जन साधारण की दु:खद स्थिति अभिव्यक्त हुई है |

(४) धार्मिक व् सांस्कृतिक परिवेश :-

उपन्यास 'कालिंदी' कुमाऊ की पृष्ठभूमि से संबंधित है इसमें इस पहाड़ी अंचल के धार्मिक विश्वासों, मान्यताओं, अन्धविश्वासो पर्वो, रीती-रिवाजों, लोक गीतों आदि के मनोहारी व् चित्ताकर्षक चित्र चित्रित हुए है | ज्योतिष के प्रति विशवास भारतीय जन मानस में गहरी पैठ बनाये हुए है | उपन्यास मैं पं. रुद्रदत्त ज्योतिषी है | उपन्यास का आरम्भ कालिंदी की जन्मकुंडली से हुआ अहै | जन्मकुंडली के आधार पर हिन्दू परिवारों में विवाह संबंध निश्चित होते हैं | जन्मकुंडली के आधार पर ही अन्ना और कालिंदी के एकाकीपन का पूर्वाभास शिवानी ने प्रस्तुत किया है | कुमाऊ में चितई के ग्वाल देवता, काषारदेवी, जाखरानदेवी के प्रति लोंगो के विशवास को भी वाणी मिली है |

इसी प्रकार धार्मिक रीती-रिवाजों में अंतिम क्रिया हिन्दुओं द्वारा हरिद्वार में सम्पन्न हुई मानी जाती है | पं. रुद्रदत्त की अंतिम क्रिया उनके भाई द्वारा हरिद्वार में की जाती है | पिटा की मृत्यु पर पुत्र द्वारा सिर मुंडवाना, अशौच पूरा करना, श्राध्धों का आयोजन आदि | उल्लू बोलना, दाहिनी आँख फड़कना जैसे शकुन-अपशकुन, अन्ना की सास द्वारा गौमूत्र से अपवित्र को पवित्र करना, अनिष्ट का दायित्व नवेली बहू पर डालना- जैसे अंधविश्वासों का वर्णन उपन्यास में हुआ है |

उपन्यास में विवाह अपने ही गौत्र में करने की परम्परा व् रीती-रिवाजों सम्बन्धी मूल्य परिवर्तित हो रहे है | इसके अतिरिक्त पहाड़ी प्राकृतिक परिवेश को शिवानिने एक साढ़े चित्रकार की लेखनी की तूलिका से कथा कैनवास पर जिवंत कर दिया है | इस प्रकार कुमाऊ की पृष्ठभूमि में धार्मिक व् सांस्कृतिक परिवेश मूर्तित हुआ है- यहाँ भी एक ओर परम्परा प्रेम है औरदूसरी ओर परम्परा से मोहभंग | समस्त भारतीय परिवेश का यही सत्य है यही यथार्थ है |

वस्तुतः कालिंदी के सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से शिवानी ने आधुनिक भारतीय समाज का यथार्थ चित्रं किया है | आज भारतीय समाज एक हाथ से अपने अतीत को पकडे रखना चाहता है तो दुसरे हाथ से पाश्चात्य मान्यताएँ समेटना चाहता है |

सन्दर्भ :-

1. शिवानी, 'कालिंदी' उपन्यास (सरस्वती विहार, दिल्ली) सं.1991, पृ.39.
2. वही, पृ. 40.
3. वही, पृ.75.
4. वही, पृ.14-15.
5. वही, पृ.95.
6. वही, पृ.143-144.
7. वही, पृ.118.
8. वही, पृ.37.